स्नातकोत्तर हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर

पंचम पत्र

उन्नीसवीं सदी में हिन्दी की प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ

प्रस्तोताः
डॉ. रमेश प्रसाद गुप्ता
सह–प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
रामदयालु सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व से ही यूरोपियों विशेषकर अंग्रेजों के आगमन से एक नयी तकनीक और शिक्षा तथा एवं अर्थव्यवस्था के प्रसार के फलस्वरूप एक आधुनिक विचार एवं चेतना का विकास हुआ, परन्तु उससे समाज में कई तरह की जटिलता एवं कठिनाईयाँ भी पैदा हुई। इसको समझने और व्यक्त करने के लिए साहित्य के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं का भी प्रारंभ एवं प्रसार हुआ। अपने देश में मुद्रण–यंत्र (छापाखाना) स्थापित करने का श्रेय पुर्तगालियों को ही है, जिन्होंने 1550 ई. में दो मुद्रण–यंत्र मंगवाकर धार्मिक पुस्तकें छापने की शुरूआत की। सन् 1674 ई. में ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा बम्बई में मुद्रण–कार्य का आरंभ किया गया। अठारहवी शताब्दी में कमोबेश मद्रास, कलकत्ता, हुगली, बम्बई आदि स्थानों में छापेखाने स्थापित हो गए थे। वैसे अंग्रेजों एवं ईसाई मिशनरियों ने समाचार–पत्र निकाले, परन्तु अपने देश के सन्दर्भ में पत्र–पत्रिका निकालने की पहल राजा राममोहन राय ने की। इस कालक्रम में श्रीरामपुर स्थित मिशन के तत्वाधान में दो पत्र यथा; 'समाचार दर्पण' एवं 'दिग्दर्शन' प्रकाशित हो रहे थे। राजा राममोहन राय प्रत्युत्तर में 'ब्रमैनिकल मैगनीज' का प्रकाशन प्रारंभ किए। 1821 ई. में उनके सहयोग से 'संवाद कौमुदी' नामक सामूहिक 'बंगला पत्र' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसके अलावे उनकी प्रेरणा से फारसी भाषा में भी दो पत्र यथा; 'गाम ए जहाँ' एवं 'मीरत–उल–अखबार' प्रारंभ हुए। 1830 ई. में उन्होंने 'बंगदूत' पत्र की नींव डाली। इसी समय हिन्दी भाषा में पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन की शुरूआत हुई, जिसे हम आगे देख सकते हैं।

19वीं सदी में हिन्दी की प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ

उन्नीसवीं सदी के पूर्वाद्ध में ही 1826 ई. में हिन्दी का पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' (1826–28) पं. युगल किशोर के सम्पादन में कलकत्ते में प्रकाशित हुआ। कलकत्ते से ही 1834 ई. में हिन्दी पत्र 'प्रजामित्र' का प्रकाशन भी प्रारंभ हुआ। 1854 ई. में कलकत्ता से ही हिन्दी का दैनिक पत्र 'समाचार सुधावर्षण' श्यामसुन्दर सेन के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ। 1867 ई. में पंजाब में

ब्रह्मधर्म के प्रचारक श्री नवीनचन्द्र राय ने हिन्दी में 'ज्ञान प्रकाशिनी' पत्रिका निकाली। आगे चलकर उन्नीसवीं सदी के उतरार्द्ध में हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन और भी अधिक संख्या में होने लगा।

भारतेन्दु–युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850 ई.– 1885 ई.) एवं उनके मंडल के प्रमुख लेखकों ने अपनी रचनाओं एवं विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए स्वयं कई पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने सम्पादन में तीन पत्रिकाएँ यथा; 'कविवचन सुधा' (1868 ई.), 'हरिशचन्द्र मैगजीन' (1873 ई.) एवं 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' (1873 ई.) निकालीं, जिनमें तत्कालीन लेखकों की रचनाएँ, भाषा–धर्म आदि विषयक व्याख्यान एवं उसकी रिपोर्ट छापी जाती थीं। 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' पत्रिका के मुख पृष्ठ पर अंकित ही रहता था – ''नवीन प्राचीन संस्कृत भाषा और अंग्रेजी में गद्य–पद्य का काव्य, प्राचीन कृत राज्य सम्बन्धी विषय, नाटक–विधा और कला पर लेख, लोकोक्ति, इतिहास, परिहास, गद्य और समालोचना सम्भूषिता'। भारतेन्दु मंडल के लेखकों के सम्पादन में निकलने वाली पत्रिकाओं में इलाहाबाद के निबंधकार बालकृष्ण भट्ट (1845 ई.–1915 ई.) के सम्पादन में 'हिन्दी प्रदीप' का 1877 ई. में प्रकाशन प्रारंभ हुआ। जबकि कानपुर के दूसरे प्रमुख निबंधकार प्रतापनारायण मिश्र ने अपने सम्पादन में 'ब्राह्मण' पत्रिका का प्रकाशन किया। इन दोनों लेखकों की पहली रचना को छापने का क्षेत्र भारतेन्दु के पत्र 'कविवचन सुधा' को ही है। भारतेन्दु मंडल के लेखक मिर्जापुर के बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' (1855–1894 ई.) ने अपने सम्पादन में 'आनन्द कादम्बिनी' एवं 'नागरी नीरद' पत्रों का प्रकाशन किया। यहाँ यह द्रष्टव्य है कि बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित 'हिन्दी प्रदीप' में हिन्दी व्यावहारिक आलोचना का प्रारंभ होता है। 1886 ई. में 'हिन्दी प्रदीप' में बालकृष्ण भट्ट ने श्रीनिवासदास के नाटक 'संयोगिता स्वयंवर' की 'सच्ची समालोचना' प्रकाशित की। तथ्य के अनुसार यदि भारतेन्दु के निबंध 'नाटक' (1883) से हिन्दी में सैद्धांतिक आलोचना की शुरूआत होती है, तो 'सच्ची आलोचना (1886) से व्यावहारिक आलोचना की। यह भी द्रष्टव्य है कि 'प्रेमधन' ऐसे दूसरे लेखक हैं, जिन्होंने अपने पत्र 'आनन्द कादम्बिनी' में आलोचना विधा को विस्तार दिया। भारतेन्दु मंडल के अन्य लेखकों द्वारा अपने सम्पादन में निकाले जाने वाले पत्रों में लालाश्रीनिवास दास (दिल्ली) द्वारा सम्पादित 'सदादर्श', केशवराम भट्ट (पटना) द्वारा सम्पादित 'बिहारह बन्धु' और गोस्वामी राधाचरण (वृन्दावन) द्वारा सम्पादित 'भारतेन्दु' भी उल्लेखनीय हैं।

उन्नीसवीं सदी में पूर्वाद्ध एवं उत्तरार्द्ध में हिन्दी भाषा में निकले वाली उक्त पत्र–पत्रिकाओं का मुख्यतः उल्लेख मिलता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का काल हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन की

दृष्टि से बड़ा ही उर्वर काल है, उनके मंडल एवं प्रभाव का शायद ही ऐसा कोई लेखक हो, जिसने पत्र–पत्रिका निकाला नहीं हो। डॉ. बच्चन सिंह के शब्दों में कहें तो ''भारतेन्दु के समय में शायद ही ऐसा कोई साहित्यकार रहा हो, जिसका सम्बन्ध किसी न किसी पत्र–पत्रिका से न रहा हो। पत्र–पत्रिकाओं में साहित्य–रचनाओं के प्रकाशन के साथ ही समसामयिक समस्याओं पर भी प्रकाश डाला जाता था। इस प्रकार उनके प्रकाशन का अर्थ था– दूसरों की समस्याओं में साझेदारी करना और उनको लेकर नयी–नयी वैचारिक भूमियाँ तैयार करना। ये पत्र–पत्रिकाएँ एक ओर जनतांत्रिक भावनाओं का पोषण करती थीं, दूसरी ओर समाज की रूढ़ियों पर प्रहार करती हुई राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही थी।'' (हिन्दी साहित्य का इतिहास, सम्पादक डॉ. नगेन्द्र) कुल मिलाकर, उन्नीसवीं सदी में हिन्दी में प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाओं ने तत्कालीन समय के साहित्य, भाषा एवं चिन्तन के विकास एवं प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस युग में साहित्य–लेखन के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन परस्पर पूरकता प्रदान किया और नवीन चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण अपनी भूमिका निभाया।

♣♣♣♣♣